

ब्रह्म ज्ञान योग संस्थान

विस्वाँ सीतापुर



“ अपरोक्ष - भक्ति ”

भक्ति नहीं, अपरोक्ष सम,

सतगुरु सम नहि पंथ !

सत्यनाम सम नाम नहिं,

सद्गुरु सम नहिं ग्रंथ !!

सदवस्तु, परमात्म सम,

आत्मबोध सम बोध !

मन सन्मुख यदि आत्म के,

मन का होय प्रबोध !!

संचालन हो आत्म से,

वही भक्त है श्रेष्ठ !

सन्मुख मन हो आत्म के,

वही मनुज है श्रेष्ठ !!

सन्मुख सम पूजा नहीं,

ध्यान, भजन कुछ नाहिं !

घटित स्वयं परमात्म हो,

क्रिया, कर्म से नाहिं !!

प्रकट है करना आत्मघट,

मनुज शरीर है लक्ष्य !

धार आत्मा की गिरे,

दर्शन हो प्रत्यक्ष !!

जीव, सुरत, मन, पूर्ण हों,

कुमति, सुमति है जाय !

मानस रोग भी नष्ट हों,

तीन ताप मिटि जाय !!

कल्कि अवतरण सभी में,

सतगुरु पंथ का लक्ष्य !

कलयुग का वरदान यह,

जीव हो धार प्रत्यक्ष !!

भक्ती जो अपरोक्ष की,

वही है पद निर्वाण !

सत्य, धार, वहाँ प्रकट है,

विद्या, सुमति और ज्ञान !!

• गीता, भागवत, वेदों, पुराणों

की सीख जीव को :-

चार दबंग तन में रहे,

मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार !

सातों फन हैं नाग के,

मन के सात विकार !!

सात फनों का कालिया,

नाग को नाथा कृष्ण !

जीव के घोड़े चार हैं,

बागडोर दो कृष्ण !!

गीता का उपदेश यह,
यही भागवत ज्ञान !

चार वेद भी कहें यह,

अष्टादशम् पुराण !!

मन के सात विकार हैं,

तन के घोड़े चार !

कृष्ण सारथी यदि बनें,

जीव हो भव से पार !!

● सात घोड़ों का रहस्य :-

- (I) काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, मद, मत्सर !
- (II) सूर्य के रथ में सात घोड़े हैं !
- (III) कालिया नाग के सात फन भी यही हैं ! जिसे कृष्ण ने नाथा था !
- (IV) घरों के अन्दर दीवार पर सात घोड़ों की तस्वीर !

• चार घोड़ों का रहस्य :-

(I) मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार !

(II) श्रीमद्भगवत्गीता के रथ में चार घोड़े हैं, जिनका सारथी कृष्ण को बनना है !

• मन के क्षेत्र में दो रथों का

रहस्य :-

दो रथ हैं मन क्षेत्र में,

यही है मन का सार !

एक में घोड़े सात हैं,

एक में घोड़े चार !!

सूर्य के रथ में सात हैं,

गीता के रथ में चार !

बागडोर दो “ कृष्ण ” को,

जीतो सब संसार !!

• मन को ही आत्मा के

सन्मुख क्यों

करना है :-

चन्द्र है सन्मुख सूर्य के,

तभी प्रकाशित होय !

कोई प्रकाश न चन्द्र में,

सूर्य प्रकाशित होय !!

मन में कोई प्रकाश नहि,

आत्म प्रकाशित होय !

सन्मुख मन हो आत्म के,

आत्म संचालित होय !!

• मन भूमि ही कर्मभूमि है :-

देवभूमि, मन भूमि है,

कर्मभूमि है जीव !

कर्म करो मन भूमि पर,

फल संसार में लेव !!

● “ मन ” को आत्मा की पूजा
करनी है :-

मन की पूजा करै सब,
पूजा करै जब मन !
“ आत्म ” पूजा “ मन ” करै !
पूर्ण समर्पित मन !!

प्रेम, भक्ति, श्रद्धा सहित,

मन हो समर्पित आत्म !

आत्म के सन्मुख रहे,

मन में हो सतनाम !!

- अपरोक्ष की भक्ति क्या है

:-

न हो बाहर न हो अन्दर,
तेल बूँद पानी पर जान !

चेतन धार के सन्मुख जीव हो,
तब अपरोक्ष की भक्ति मान !!

- सरगुण, निरगुण और
अपरोक्ष भक्ति में
अंतर क्या है :-

1. पूजा, तीरथ, कथा, आरती,

इन्द्रिय पूजा सरगुण जान !

2. ध्यान, योग, जप, तप सब मन के,

अन्दर साधन निरगुण मान !

3. अन्दर बाहर जो नहीं,

न करता स्पर्श !

धार आत्मा की गिरे,

सन्मुख भक्ति अपरोक्ष !!

• दो प्रकार के पंथ :-

1. दो प्रकार के पंथ हैं,

एक माया एक सत्य !

जीव को चुनना पंथ है,

माया चुने या सत्य !!

2. माया, भवसागर का पंथ है,

मोक्ष का पंथ है सत्य !

जीव सदा फँसता ही रहता,

वह माया का पंथ !!

3. जीव तुरत ही पूर्ण मुक्त हो,
वही सत्य का पंथ !

माया छोड़ि सत्य को पकड़ो,
“ जीव ” का आत्म पंथ !!

- जीव दोनों पंथों की पहिचान
कैसे करेः :- सन्मुख समर्पण और
संचालन के आधार पर दोनों पंथों की
पहिचान !

1. सन्मुख :-

निरगुण, सरगुण मन पंथ है,

“ जीव ” मन के सन्मुख होय !

अपरोक्ष ही आत्म पंथ है,

“ मन ” आत्म के सन्मुख होय !!

2. समर्पण :-

“ जीव ” समर्पित “ मन ” को,

मन पंथ है जान !

मन हो समर्पित आत्म को,

आत्मपंथ है मान !!

3. संचालन :-

संचालन “ जीव ” का मन करे,

मन पंथ है जान !

मन हो संचालित आत्म से,

आत्म पंथ है मान !!

• जीव अपने मन का उपयोग

कैसे करे :-

“ तन ” “ जीव ” का हरि कृपा से,

“ मन ” “ जीव ” आधीन !

जहाँ लगावो वही फल,

प्रभु ने उपहार में दीन !!

● जीव की आवश्यकता :-

1. स्थिर बुद्धि और मति सुमति,
सबसे पहला काम !

भाव, विचार दुरुस्त हो,
सन्मुख “मन” सतनाम !!
2. चार चतुष्ठप शून्य हो,
मन, बुद्धि, चित, अहंकार !

सुरत भी स्थिर साथ हो,
कार्य पूर्ण संसार !!

• संसार की वस्तुओं को कैसे
चुने :-

ऐसी वस्तु को लीजिये,
गुणवत्ता में उच्च !

उसी वस्तु को तुम चुनो,
जो सब में सर्वोच्च !!

• संसार के कार्य पूर्ण कैसे हो

:-

- (I) मन, बुद्धि, मति स्थिर करो,
फिर आगे के काम !
निर्णय “ मन ” तुरतै करे,
तभी पूर्ण हों काम !!
- (II) मति, गति, बुद्धि स्थिर रखो,
फिर सोचो तुम काम !
सुरत रखो मन साथ में,
सभी पूर्ण हों काम !!

● चार धाम का भेद :-

1. लीला धाम या
नित्य धाम, शरीर
2. पद धाम या
प्रकाश !
3. नाम धाम या
अनहंदनाद !
4. सत्यधाम या
सत्यनाम या
परम धाम !

लीला धाम शरीर है,

है पद धाम “ प्रकाश ” !

नाम धाम कहें नाद को,

सत्य धाम है खास !!

तीन धाम हैं तत्त्व के,

चौथा धाम अतत्त्व !

तीनों से होना अनन्य,

सन्मुख जीव अतत्त्व !!

● सप्तऋषि और पंचवटी का

भेद :-

सात चक्र हैं सप्तऋषि,

पंचवटी पाँच नाम !

भेद छिपा है इसी में,

कौन चक्र सतनाम !!

सुरेशा दयाल

ब्रह्मज्ञान योग संस्थान मौवकला

बिसवाँ सीतापुर (उत्तर प्रदेश)

सम्पर्क सूत्र - (9984257903)